ग्वालियर। मध्य प्रदेश सरकार द्वारा नवीन गठित 'आनंद मंत्रालय' के ग्वालियर आनंद विभाग द्वारा आयोजित 'परिवर्तन साइकिल रैली' का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए भोपाल ज़ोन की निदेशिका ब्र.कु. अवधेश बहन, शिवराज वर्मा,ए.डी.एम. ग्वालियर व नोडल अधिकारी आनंद विभाग, रिकेश्य वैश्य,एस.डी.एम., डॉ. सत्य प्रकाश शर्मा,आनंदक सहयोगी, आशीष कुमार शर्मा,उपाध्यक्ष,बेटी रक्षा मंच व अन्य सदस्य तथा अवेयर टीम के सदस्य, ऋषिकेश वशिष्ठ,जिला योग प्रभारी तथा अन्य।

बड़ौदा-मंगलवाड़ी। महाशिवरात्रि के अवसर पर जी.एच.आर.सी. में आयोजित 'फ्री डायगनोस्टिक एंड ट्रीटमेंट कैम्प फॉर आई डिज़ीज़ेज़' में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. भगवान। साथ हैं डॉ. विशाल गुप्ता, ब्र.कु. राज बहन तथा डॉ. केतन पटेल।

सावळज-महा.। चंद्रकांत पाटील,सदस्य,सांगली परिषद तथा मनीषा माळी,सदस्य,पंचायत समिति तासगांव को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. डॉ. वैशाली तथा ब्र.कु. जयश्री।

सिलवासा। 'बाल व्यक्तित्व विकास शिविर' का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए हिमांशु भाई,मिलटन कंपनी के युनिट हेड, बसवराज भाई,पतंजलि योग, ब्र.कु. सुरेखा तथा अन्य।

पूर्णा-परभणी। 'श्रीमद् भागवद् कथा' कार्यक्रम में ईश्वरीय संदेश तथा सत्य गीता सार सुनाते हुए ब्र.कु. प्रणिता।

मलकापुर-कोल्हापुर। ज्ञानचर्चा के पश्चात् नगराध्यक्ष अमित केसरकर, उपनगराध्यक्ष दीपक पाटील तथा जिला परिषद अध्यक्ष सर्जेराव पाटील को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए माउण्ट आबू से ब्र.कु. राहुल तथा ब्र.कु. वंदना।

पशुपतिनाथ और मछन्दरनाथ

- ब्र.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा

शैवमत के ग्रंथों में परमात्मा शिव को 'पशुपतिनाथ' भी कहा गया है क्योंकि जैसे पालतू पशु रस्सियों से बंधा हुआ रहता है, वैसे ही हरेक आत्मा भी अपने कर्मों रूपी बंधनों, अर्थात् पाशों (रस्सियों) से बंधी हुई है। अन्यथा, जैसे पशु कम बुद्धि वाले होते हैं और अपनी इन्द्रियों के वशीभूत होकर अथवा सहज प्रवृत्तियों के प्रभाव में आकर चलते हैं, वैसे ही प्राय: मनुष्यात्माएं भी इन्द्रियों के वश होकर व्यवहार करती हैं। जब आत्माएं परमपिता शिव को अपना 'नाथ' अथवा मालिक मानकर उसकी शरण में जाती है और उसकी आज्ञाओं का पालन करती है तभी वे अनाथ से सनाथ बनती है। तभी नर पशु से पुरूषोत्तम बनते हैं अथवा दानव से देव पद प्राप्त करते हैं।

परंतु आज कुछ लोग ऐसे भी हैं जो पशुपति शिव को अपना नाथ मानने के बाद भी दूसरों

कई मनुष्य भरपूर होने पर भी दूसरों को किसी भी ओर आगे नहीं बढ़ने देते, न उन्हें कोई लाभ होता देख सकते हैं। ईर्ष्या, क्रोध, अभिमान के वशीभूत होकर वे कभी-भी दूसरों को खदेड़ने ही में लगे रहते हैं। इस कलिकाल में मनुष्यों का ऐसा पाशविक व्यवहार मानवता के नाम पर काला धब्बा है।

के साथ ऐसा व्यवहार करते हैं जैसे कि वे (पूर्वोक्त तथा उत्तरोक्त) दोनों पशु अथवा अनाथ हों। पाशों से कसा हुआ पशु भी खूंटे से तो बंधा रहता है और उसी के आस-पास थोड़े ही घेरे में अपने स्वभाव-संस्कार से प्रहार करता है, परंतु आवारा पशु तो उधम मचा देता है। इसलिए लोग आवारा बैल से, बेलगाम घोड़े से, मस्त निरंकुश हाथी से, वन के बंदर से, बिना पट्टे वाले कुत्ते से और बिल के बाहर चलते हुए सांप से अधिक डरते हैं। इसी प्रकार, कुछ मनुष्य भी ऐसे होते हैं कि वे जहां-तहां उत्पात मचाते हैं, सीधे-सादे मनुष्यों को डराते हैं और निर्दोषों पर भी लपक कर आते हैं। ऐसे ही मनुष्यों के लिए कहा गया है कि वे पशुओं से भी बदतर हैं। यदि शिव को मानने तथा पहचानने पर भी कुछ लोग ऐसा करते हैं तो वे सनाथ होते हुए भी अनाथ हैं क्योंकि उनका परमात्मा शिव से योग अर्थात् संबंध नहीं है। वे इन्द्रियनाथ नहीं हैं, मछन्दरनाथ हैं।

पशुओं में भी प्रकारान्तर है। सभी पशुओं में एक जैसे गुण-दोष नहीं हैं। हरेक पशु जाति के गुण-दोष भी अलग-अलग ही हैं। कुत्ता मालिक का वफादार तो होता है परंतु उसके बारे में प्राय: यह आक्षेप है कि जब वह गाय को चारा खाते देखता है तो उसे परेशान करता है, वह उसे चारा खाने से खदेड़ता है यद्यपि वह चारा उसके अपने खाने के योग्य पदार्थ नहीं है। अन्यश्च, कुत्ता यदि अपने इलाके में किसी दूसरे कुत्ते को आते देख लेता है तो वह उसका पीछा करके उसे दूर भगा आता है, गोया वह दूसरे कुत्ते को अपने इलाके में खाने-पीने की कमी न भी हो और चाहे वह कुत्ता उसके अपने ही परिवार में नानी या दादी की तरफ से कोई रिश्तेदार भी क्यों न हो। इसी प्रकार सांड भी जब किसी दूसरे सांड को अपने इलाके में आया देख लेता है तब वह अपने माथे और सींग को दूसरे सांड से भिड़ा देता है। तब वह यह भी नहीं देखता कि बाज़ार में बच्चे भी खड़े हैं और बूढ़े भी और कि वहां शीशे-कांच-चीनी के बर्तनों या सामान की दुकान है। सभी लोग भयभीत होकर भागते हैं और यदि कोई लठ लेकर सांड की ओर बढ़ता है तो भी सांड ईर्ष्या, क्रोध, अभिमान और हिंसा के वशीभूत हुआ लठ-मठ कुछ भी नहीं देखता। वह तो मरने-मारने को तैयार होता है और स्वार्थ के वश निर्बुद्धि तथा उन्मत्त हुआ होता है। फिर बंदर का यह हाल है कि चने की ढेरी मिलने पर भी वह दूसरे बंदरों पर बिगड़कर उन्हें दूर भगाता है।

हम देखते हैं कि कई मनुष्यों की भी वैसी ही प्रवृत्तियां हैं। वे भरपूर होने पर भी दूसरों को किसी भी ओर आगे नहीं बढ़ने देते, न उन्हें कोई लाभ होता देख सकते हैं। ईर्ष्या, क्रोध, अभिमान के वशीभूत होकर वे कभी-भी दूसरों को खदेड़ने ही में लगे रहते हैं। इस कलिकाल में मनुष्यों का ऐसा पाशविक व्यवहार मानवता के नाम पर काला धब्बा है। लालच की भी कोई तो हद होनी चाहिए। मनुष्य तो उनसे भी छीना-झपटी करता है जिसने उसे जन्म दिया हो। औरंगजेब ने शाहजहां बादशाह के साथ क्या किया! उसने अपने भाइयों में से भी हरेक के साथ क्या किया! नादिरशाह ने दिल्ली के चांदनी चौक और उसके आसपास क्या किया!! इंसान मंदिर-मस्जिद, गुरूद्वारे में जाकर तो भगवान को कहता है कि - ''हे प्रभु, आप रहमदिल हैं, मुझ पापी पर भी दया करो।'' परंतु वह दूसरों को फिर भी निर्दयता से मात देते हैं। वे कहते तो यही हैं कि हम भगवान के बच्चे हैं परंतु काम शैतान जैसा करते हैं। वे ऐसा-ऐसा जुल्म करते हैं कि तोबह भी भली। परंतु उन मनुष्यों को आप क्या कहेंगे जो योगी कहलाते हों, परंतु वास्तव में पशुओं की तरह भोगी हों। वे सकारात्मक विचार की बात करते हों परन्तु अत्याचार करते हों। भक्ति-मार्ग के ग्रंथों में भी गाय, ब्राह्मण, निर्धन, नारी और निहत्थे व्यक्ति पर हमला करना, उसे चोट लगाना, दु:ख देना महापाप माना गया है जिसका दंड बहुत बड़ा है। यदि कोई ब्रह्मचारिणी हो, योगिनी हो, सच्चे अर्थों में ब्राह्मिणी हो, उसमें तो पूर्वोक्त गाय, ब्राह्मण, नारी इत्यादि सभी के लक्षण विराजमान होते हैं, तब उन्हें दु:ख देने वाले का क्या हाल होगा! उसके अत्याचार से उनके मन में जो हाय-तोबह की गुप्त आवाज़ उठेगी, वह अग्नि तो भभक कर भस्म कर देगी। जो परमात्मा ही के आश्रय पर हो उसे दु:ख देने की कितनी बड़ी सज़ा होगी। सत्ता के अभिमान से यद्यपि मनुष्य को अभी कुछ भी अपने कर्म गलत दिखाई नहीं देंगे परंतु त्राहि-त्राहि का जो श्वॉस वे नर-नारी लेंगे जिन पर अत्याचार हुआ, वह प्रसिद्ध, प्रतिष्ठा प्राप्त, पदासीन व्यक्ति को एक-न-एक दिन तो प्रभु के कटघरे में खड़ा कर ही देगी। तब कौन बचाएगा। जो व्यक्ति प्रभु-आश्रित व्यक्तियों पर अत्याचार करता है, उसका पागलपन प्रभु का पहला गुप्त डंडा है। ऐ मनुष्य, किसी को मत सता, किसी के आँसू मत बहा, किसी की 'हाय' मत निकलवा क्योंकि इससे तो तिरसठ जन्मों की कुल पीड़ा से भी ज़्यादा पीड़ा भोगनी पड़ती है। विशेष तौर पर जो भगवान के बने हैं, उनके मन को मत दुखा क्योंकि वह पशुपतिनाथ देखता है और तेरा छुटकारा नहीं होगा, तू पशु ही बना रहेगा, पाशों में बुरी तरह बंध जायेगा। इन्द्रियनाथ बनने की बजाए तू मछन्दरनाथ मत बन, माया मछन्दर का खेल मत कर, क्योंकि यह दिल-लगी नहीं है, यह तो जन्म-जन्म का सौदा है।

आज तो पशुओं पर अत्याचार की रोक-थाम के लिए भी कानून बन चुके हैं। यदि उन पर भी कोई अत्याचार करता है तो सरकार उन्हें दण्डित करती है। ऐसी संस्थाएं भी बनी हुई हैं जो पशुओं पर अत्याचार करने वालों पर मुकदमा कर देती है। परंतु दूसरी ओर हम देखते हैं कि कुछ लोगों की जीवन-पद्धति अथवा कार्य-प्रणाली ही ऐसी है कि वे सत्ता, धन, पद, प्रतिष्ठा इत्यादि के नशे में अपने अधीन या कमज़ोर लोगों को दु:ख देना नहीं छोड़ते, परंतु हरेक चीज़ का समय होता है। लगता है कि अब घड़ा लगभग भर चुका है। अब अति के बाद अंत होना ही चाहिए। पशुपतिनाथ मछन्दरनाथों को सद्बुद्धि दें या जैसे भी हो, निपटारा करायें।